पुलिया पर दुनिया

अनूप शुक्ल

ब्लॉग जगत के शुरुआती दिनों के साथियों को जिनमें शामिल हैं :

- रविरतलामी - जिनसे पता चला कि ब्लॉग क्या है।
- देबाशीष- हिन्दी ब्लॉगिंग के शुरुआती दिनों के सूत्रधार।
- पंकज नरूला - जिनके दिये जीमेल खाते को हम आज भी प्रयोग कर रहे हैं।
- अतुल अरोरा- जिनका लिखा हम आज भी मिस करते हैं।
- जीतेन्द्र चौधरी- जो हमेशा बस एक ई-मेल की दूरी पर रहते रहे।
- इन्द्र अवस्थी- जो ठेलुहई की शुरुआत करके फ़ूट लिये।
- रमन कौल- जिनके नाम पहली ब्लॉगिंग मीट का रिकार्ड है (अतुल के साथ)।
- ई-स्वामी- जिन्होंने खुद भले न लिखा लेकिन हिन्दिनी पर हमारे लिखने का इंतजाम किया।
- आलोक कुमार- आदि चिट्ठाकार जिनकी ब्लॉगिंग देखकर ही शायद ट्विटर बना हो।
- मृणाल त्रिपाठी- जिनका खरीदवाया हुआ लैपटाप हम आज तक चला रहे हैं।

और सर्वहारा पुलिया के तमाम किरदारों और पाठकों को जिनका उल्लेख इस किताब में है।

पुलिया परिचय

पुलिया, माने पुल का संक्षिप्त रूप। जैसे नाले का नाली, कुएं का कुइंयां, बस ठीक वैसे ही पुल से बना पुलिया। जबलपुर ही क्या, हम कहीं भी रहें, रास्ते चलते शायद ही कोई याद रखता हो कि बीच में कोई पुलिया है क्या! जहां किस्से मिले, कहानियां मिलें। ऐसा असंभव था अबतक।

ठीक से याद नहीं, पर मई के लू भरे महीने में श्री अनूप शुक्ल नें पहली बार फेसबुक के माध्यम से वाहन निर्माणी, जबलपुर के आसपास स्थित किसी पुलिया का ज़िक्र किया था। उस वक्त मुद्दा पुलिया नहीं थी, पुलिया पर खड़े अनूप जी थे और वे लोग जिनसे बतियाए जा रहे थे वे । फ़िर एकाएक लूना पर आलू बेचने वाले किसी फुटकर व्यापारी का पुलिया पर मिलना और यह बताना कि दामों के बढ़ने या घटने की चिल्लपों के बीच वह बेचारा पिस जाता है, पुलिया मेरे ध्यान में आई। लगा कि वह अड्डा हो सकती है। उस पर शायद अब जमघट लगे। पर कहानी इतने आगे जाएगी, ऐसा तो सोचा भी न था।

धीरे धीरे हम देखते हैं, कि पुलिया से लगे पेड़ों की छांव तले दुनियादारी से जूझते नए नए किरदार सुस्ताने आने लगे हैं। १६ मई, २०१४ के बाद से देश में जो राजनीतिक कायापलट हुई, तब से पुलिया पर लिखे गए उन सभी लेखों पर आम आदमी में उस प्रभाव की झलक साफ़ नज़र आती है। अच्छे दिनों के मायने क्या हैं, जरा पुलिया से पूछिए।

तो पुलिया पर असली कहानी शुरू होती है कुछ ऐसे किरदारों से जो कि रोज़ सुबहो शाम वहां सुस्ताने आया करते हैं। उनमें दिहाड़ी मजदूर हैं, फल का ठेला लगाने वाले रामफल यादव हैं, बिलासपुर वाले तिवारी जी हैं जो पुलिया पर अक्सर अपना योग प्रदर्शन दोहराते रहे हैं और अनूप जी मंजे हुए रिपोर्टर की भांति रिपोर्टरी करते मिल रहे हैं।

इन सबको पढ़ते पढ़ते एक आदत सी हो गई। आज सुबह फैक्ट्री कर्मचारी मिले होंगे कि नहीं? रामफल या तिवारी जी से उनकी क्या बात हुई होगी? गर्मी में कुल्फी और आजकल मलाई लगाकर डोनड बेचने वाला बच्चा आज मिला कि नहीं? यह सभी बातें हमें पुलिया पुराण का आदी बना चुकीं थीं। हम रोज़ाना अनूप जी की पोस्ट का इंतज़ार करते कि देखो आज क्या पता किसके बारे में लिखते हैं, आज किसकी कहानी, कैसे फ़साने होंगे। खुदा जानें।

अनूप जी के ही माध्यम से लोग धीरे धीरे पुलिया को जानने लगे थे तो वहीं प्रशंसकों का एक नया तबका भी बन रहा था जो कि पुलिया की वजह से अनूप जी को समझने लगा था। उनसे जुड़ने लगा था। सच ही तो है, पुलिया जोडती है।

और एक खास बात यह भी कि आज तक पुलिया पर मिले वे सभी लोग न कोई बहुत बड़ी शक्सियतें हैं, न नेता पत्रकार हैं, न बड़े अफसर और न ही हम आप जैसे दफ्तर के मारे। वे न तो शोषक हैं और न ही शोषित, पर वे किस हाल में हैं? कैसे गुजारा करते हैं? उनके मन में क्या है? और दुनिया के बारे में उनका असल में सोचना क्या है, पुलिया नें यह बखूबी समझाया है। हम दरअसल, जिस आब-ओ-हवा को व्यवस्था समझने का मुगालता पाले बैठे हैं, पुलिया उसे खारिज करते हुए एक ऐसे जहां से हमारा तारुफ़ कराती है जहां केवल और केवल रोजी रोटी की दौड़ है, रोज़ की थकान है, दुःख सुख के अपने छोटे बड़े किस्से हैं, मुस्कराहट भी है पर वे इस बात से कत्तई बेपरवाह हैं प्रधानमंत्री नें अमेरिका के मेडीसन स्क्वायर पर क्या कहा? चीन पाकिस्तान का क्या होगा? भारत नें कितने मैच जीते? और रामपाल पर कोर्ट का अगला फैसला कब आएगा?

मोटा मोटी समझें, तो पुलिया के पिटारे में कभी व्यंग्य छिपा है, कभी किसी मजदूर का पसीना, कभी किसी ठेलेवाले के बाज़ार के बारे में पूर्वानुमान, यहां कुछ बेचता बचपन मिलेगा तो कभी लकड़ी का गट्ठर अपने सर पर लादे हमारी आधी आबादी। पुलिया वह भी है जिसपर बैठा कोई तकदीर का मारा कुछ सोच विचार रहा है। वह कुछ भी नहीं कहता पर पुलिया जो है, सब जान लेती है। सोचता हूं कभी कभी, ये जो बाहर से जितनी दिखती है, केवल उतनी ही है या फिर हज़ारों मुसाफ़िरों की मन की बात अपने विशालतम ह्रदय में दबाए।

और अंत में, ब्लॉगिंग और व्यंग की दुनिया के सबसे पुराने चावलों में से एक श्री अनूप शुक्ल जी को मेरी दिली मुबारकबाद, जो इन किस्सों को केवल अपने पाठकों को समर्पित करते हुए इसे एक अल्बमनूमा ई-बुक का मूर्त रूप दे रहे हैं।

ओ पुलिया
तू यूं ही आबाद रहना
सबकी छांव बनी रहना
वैसे ही, जैसे कि मां
अपने बच्चों की छांव बनी रहती है
क्योंकि तेरी गोद में
नित ज़िन्दगी बैठा करती है
कुछ फ़साने कहा करती है ..

- प्रियम तिवारी
ईमेल: tiwaripreeyam@gmail.com
मोबाइल:7359100024